२. इन्द्रसभा

I. प्रश्न उत्तर

प्र.१. नारदजी ने इन्द्र के सामने हरिश्चन्द्र के किन गुणों की चर्चा की ?

उ. नारदजी ने इन्द्र के सामने हरिश्चन्द्र के गुणो की चर्चा इस तरह की है कि हरिश्चन्द्र धन्य हैं । वे निष्कपट स्वभाव के हैं । सत्य के तो वे साकार रुप हैं । उनके भीतर बाहर एक सा होता है । उनके मन, वचन, कर्म एक से रहते हैं । वे निश्चय ही महाशय हैं । उनके आशय बहुत उदार हैं। विद्यानुराग, उपकार आदि गुण उनमें सहज हैं । अधिकार में क्षमा, विपत्ति में धैर्य, सम्पत्ति में निराभिमानी और युध्द में स्थिरता है । वे ईश्वरीय सृष्टि के रत्न हैं । दान करके उन्हें प्रसन्नता होती है और कितना भी देने पर उन्हें संतोष नहीं होता । इन गुणों पर ईश्वर की निश्चल भक्ति उनमें सबका भूषण हैं । वे स्वर्ग को भी दूसरों को दान में दे सकते हैं । वे महान चरित्रवान भी है ।

प्र. २. इन्द्र के मन में हरिश्चन्द्र की परीक्षा लेने की इच्छा क्यों हुई ?

उ. इन्द्र बड़े ईर्ष्यालु स्वभाव के थे । वे सदा स्वर्ग के राजा बने रहना चाहते थे । नारद जी के मुख से हरिश्चन्द्र के गुणों की चर्चा सुनकर इन्द्र के मन में हरिश्चन्द्र की परीक्षा लेने की इच्छा हुई । क्योंकि चाहे हरिश्चन्द्र के मन में स्वर्ग लेने की इच्छा न हो फिर भी वह अपने कर्मों से स्वर्ग का अधिकारी अवश्य बन सकता है । इन्द्र हरिश्चन्द्र की परीक्षा लेकर उनके गुणों को अपनी आँखों से देखना चाहते थे ।

प्र.३. " इन्द्रसभा " नाटक का सारांश लिखिए ।

उ. " इन्द्रसभा " नाटक के नाटककार ' श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ' जी हैं । नाटक का सारांश इस प्रकार हैं ।

इन्द्र की सभा में इन्द्र आसन पर बैठे हैं । इतने में वहाँ नारद जी आते हैं । बातों ही बातों में वे अयोध्या के राजा हरिश्चन्द्र के गुणों की चर्चा करते हैं । वे कहते हैं कि हरिश्चन्द्र सूर्यकुल में महान हैं । वे धन्य हैं । वे निष्कपट स्वभाव के हैं । सत्य के तो वे साकार रुप हैं । उनके भीतर बाहर एक सा होता है । उनके मन, वचन, कर्म एक से होते हैं । वे निश्चय ही महाशय हैं । उनके आशय बहुत उदार हैं। विद्यानुराग, उपकार आदि गुण उनमें सहज हैं । अधिकार में क्षमा, विपत्ति में धैर्य, सम्पत्ति में निराभिमानी और युध्द में स्थिरता है । वे ईश्वरीयसृष्टि के रत्न हैं । दान करके उन्हें प्रसन्नता होती है और कितना भी दान देने पर उन्हें संतोष नहीं होता । इन गुणों पर ईश्वर की निश्चल भक्ति उनमें सबका भूषण हैं । वे स्वर्ग को भी दूसरों को दान में दे सकते हैं । इस प्रकार हरिश्चन्द्र के गुणों का बखान नारद जी के मुख से सुन कर इन्द्र सोचते हैं कि हरिश्चन्द्र के मन में स्वर्ग लेने की इच्छा चाहे न हो तब भी वह अपने कर्मों से स्वर्ग के अधिकारी अवश्य बन सकते हैं । इसलिए इन्द्र हरिश्चन्द्र की परीक्षा करके उनके गुणों को स्वयं अपनी आँखों से देखना चाहते थे । इतने में वहाँ

विश्वामित्र आते हैं । नारद जी चले जाते हैं । विश्वामित्र विषय जानकर क्रोध में आ जाते हैं और हरिश्चन्द्र को तेजो भ्रष्ट करने की प्रतिज्ञा करते हैं ।

I. विलोम शब्द लिखिए ।

१.	गुण	X	दोष /अवगुण	७.	अभिमान	X	निराभिमान
२.	निष्कपटी	X	कपटी	८.	स्पष्ट	X	अस्पष्ट
३.	पराधीन	X	स्वाधीन	९.	कीर्ति	X	अपकीर्ति
४.	महात्मा	X	दुरात्मा	१०.	ग्रहण	X	त्याग
५.	क्षय	X	अक्षय	११.	सत्य	X	असत्य
६.	क्षुद्राशय	X	महाशय	१२.	निस्संदेह	X	संदेह

II. ' पर ' उपसर्ग जोड़कर शब्द पहचानिए ।

	उपसर्ग	शब्द		
१.	पर	उपकार	=	परोपकार
२.	पर	देशी	=	परदेशी
३.	पर	आधीन	=	पराधीन
४.	पर	लोक	=	परलोक

III. वाक्यों मे प्रयोग कीजिए ।

१. अवसर - मौका
लालची इन्सान अवसर पाते ही लाभ उठाते है ।

२. क्षुद्राशय - नीच
ईर्ष्या करना क्षुद्राशय का काम है ।

३. प्रबन्ध - व्यवस्था
माता - पिता अपने बच्चों की पढ़ाई का प्रबन्ध करते हैं ।

४. दुरात्मा - दुष्ट व्यक्ति
कंस जैसा दुरात्मा व्यक्ति इस धरती पर फिर नहीं पैदा हुआ ।

५. प्रसंग - विषय, संबंध
छोटे बच्चों को बड़ों के प्रसंग में कुछ नहीं कहना चाहिए ।

IV. सही कारक चिन्हों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

१. मैं उनके स्वभाव से संतुष्ठ हूँ ।
२. अपना सर्वस्व वह क्षणभर में दे सकता है ।
३. गाँव में धन की कमी है ।

V. संधि विच्छेद कीजिए ।

१.	अत्यंत	=	अति	+	अंत
२.	दुरात्मा	=	दुः	+	आत्मा
३.	विद्यानुराग	=	विद्या	+	अनुराग
४.	महाशय	=	महा	+	आशय
५.	महात्मा	=	महा	+	आत्मा

VI. प्रत्यय अलग कीजिए ।

			प्रत्यय				प्रत्यय
१.	धार्मिक	-	इक	४.	ईश्वरीय	-	ईय
२.	अधिकारी	-	ई	५.	सत्यवादी	-	ई
३.	परोपकार	-	कार				

VII. वस्तुनिष्ठ प्रश्न - उत्तर ।

१. " इन्द्रसभा " नाटक के नाटककार कौन है ?
उ. श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ' जी ।

२. नारद जी कहाँ से आये थे ?
उ. अयोध्या

३. इन्द्र की सभा में कौन आये ?
उ. नारद

४. सत्य का साकार रुप कौन है ?
उ. हरिश्चन्द्र

५. हरिश्चन्द्र किस कुल के राजा थे ?
उ. सूर्यकुल

६. बड़ों का परिहास करने से क्या होता है ?
उ. निंदा

७. अपना सर्वस्व क्षण में कौन दे सकते है ?
उ. हरिश्चन्द्र

८. नारद के अनुसार कौन बड़ा है ?
उ. जिसका चित्त बड़ा

९. किसकी भृकुटि चढ़ जाती है ?
उ. विश्वामित्र की

१०. हरिश्चन्द्र अपने कर्मो से स्वर्ग का अधिकारी होने का संदेह किसको हुआ ?
उ. इन्द्र को

११. व्यक्ति में कौन सी वस्तु अत्याधिक मुख्य है ?
उ. चरित्र

१२. महाशय कैसे होते है ?
उ. भीतर - बाहर एक से ।

१३. विपत्ति में किसकी जरुरत होती है ।
उ. धैर्य

१४. इन्द्र किसकी परीक्षा लेना चाहते हैं ?
उ. हरिश्चन्द्र की

१५. विश्वामित्र का स्वभाव कैसा है ?
उ. क्रोधी

१६. ईर्ष्या करना किसका काम है ?

उ. क्षुद्राशयों का

१७. विश्वामित्र ने हरिश्चन्द्र को क्या करना चाहा ?

उ. तेजोभ्रष्ट

१८. किसके मन, वचन, कर्म एक रहते है ?

उ. महात्मा के

१९. नारद के बाद इन्द्र सभा में कौन आए ?

उ. विश्वामित्र

२०. हरिश्चन्द्र को कब प्रसन्नता होती है ?

उ. दान करते समय ।

***